एरण के विशेष संदर्भ में ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति की विशेषताएँ(Features of Chalcolithic Culture with Special Reference to Eran)

एरण (Eran) मध्य प्रदेश के सागर ज़िले में स्थित एक बहुत ही प्रसिद्ध पुरातात्त्विक स्थल है। यह स्थान भारत की प्राचीन सभ्यता के अध्ययन में विशेष महत्व रखता है क्योंकि यहाँ से ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Age) से संबंधित अनेक प्रमाण मिले हैं। इस काल में मनुष्य ने पत्थर के औजारों के साथ-साथ तांबे का प्रयोग भी शुरू कर दिया था। इसलिए इसे ताम्र-पाषाण काल कहा जाता है। एरण की खुदाई से मिली वस्तुएँ यह स्पष्ट रूप से बताती हैं कि इस क्षेत्र के लोग उस समय कृषि, पशुपालन, धातु विज्ञान, कला और धार्मिक जीवन में काफी प्रगति कर चुके थे।

1. भौगोलिक स्थिति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

एरण बेतवा नदी के किनारे बसा हुआ है, जो नर्मदा नदी की एक सहायक नदी है। जलस्रोत की उपलब्धता और उपजाऊ भूमि के कारण यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही मानव निवास के लिए उपयुक्त रहा है। यहाँ का वातावरण कृषि और पशुपालन के लिए अनुकूल था। एरण का इतिहास बहुत प्राचीन है और यह स्थान बाद में गुप्तकाल में भी प्रसिद्ध रहा, परन्तु ताम्रपाषाण काल में इसकी नींव रखी गई थी।

2. आर्थिक जीवन:

एरण के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन कृषि था। खुदाई में मिले अन्न के दानों से यह पता चलता है कि यहाँ गेहूँ, जौ, चना, अरहर और तिल जैसी फसलें उगाई जाती थीं। खेती के लिए तांबे और पत्थर के औजारों का प्रयोग होता था, जिससे खेती अधिक आसान और प्रभावी हो गई थी।

पशुपालन भी एरण की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा था। गाय, बैल, भेड़, बकरी और सूअर पाले जाते थे। इनसे दूध, मांस, चमड़ा और खेती के लिए बैल की शक्ति प्राप्त होती थी।

इसके अलावा, लोग शिकार, मछली पकड़ने और मिट्टी के बर्तन बनाने जैसे कार्यों में भी लगे रहते थे। वस्तुओं का आदान-प्रदान (barter system) भी यहाँ प्रचलित था, जिससे व्यापारिक संबंधों का पता चलता है।

3. निवास और बस्तियाँ:
एरण की खुदाई से जो घर और बस्तियाँ मिली हैं, वे इस बात का प्रमाण हैं कि लोग अब स्थायी जीवन जीने लगे थे। घर मिट्टी और कच्ची ईंटों से बनाए जाते थे। कुछ घरों में चूल्हे, भंडारण स्थल और मिट्टी के फर्श मिले हैं। इससे पता चलता है कि लोग अपने घरों को व्यवस्थित रूप से बनाना जानते थे।
बस्तियों का निर्माण किसी एक योजना के अनुसार नहीं हुआ था, परंतु सामुदायिक रूप से बसावट के संकेत अवश्य मिलते हैं। यह दर्शाता है कि समाज में सहयोग और सामूहिकता का भाव था।
4. मृद्भांड (Pottery):
एरण से प्राप्त मिट्टी के बर्तन इस संस्कृति की पहचान माने जाते हैं। यहाँ लाल, काले और भूरे रंग के बर्तन मिले हैं। इन बर्तनों पर रेखाएँ, वृत्त और ज्यामितीय आकृतियाँ बनाई गई हैं। इससे यह पता चलता है कि एरण के लोग कलात्मक रुचि रखते थे और सौंदर्य की भावना उनमें विकसित हो चुकी थी।
कुछ बर्तन भोजन पकाने, कुछ पानी रखने और कुछ धार्मिक उद्देश्यों के लिए बनाए जाते थे। यह भी संकेत मिलता है कि लोग अब उपयोगिता के साथ-साथ सजावट पर भी ध्यान देने लगे थे।
5. धातु-प्रयोग और औजार:
ताम्रपाषाण काल की सबसे बड़ी विशेषता धातु का प्रयोग था। एरण से तांबे के औजार जैसे—कुल्हाड़ी, छुरा, तीर की नोक, और चाकू मिले हैं। इन औजारों का उपयोग खेती, शिकार और लकड़ी काटने में किया जाता था।
हालांकि पत्थर के औजारों का प्रयोग पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ था, इसलिए इस काल को 'ताम्र-पाषाण काल' कहा गया। यह काल पत्थर युग और लौह युग के बीच का संक्रमणकाल था।
6. सामाजिक जीवन:
एरण के लोग सामूहिक रूप से रहते थे। परिवार संस्था का विकास हो चुका था और परिवार समाज की मूल इकाई था। पुरुष खेती और शिकार करते थे, जबकि महिलाएँ घर के कार्यों, मृद्भांड निर्माण और आभूषण बनाने में लगी रहती थीं।
कुछ घरों में आभूषण, रंगीन मनके और सजे हुए वस्त्रों के प्रमाण मिले हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाज में धनी और सामान्य वर्ग का भेद प्रारंभ हो चुका था।

7. धार्मिक जीवन:

एरण के लोगों की धार्मिक मान्यताएँ मुख्यतः प्रकृति से जुड़ी थीं। वे सूर्य, चंद्रमा, जल, अग्नि आदि प्राकृतिक शक्तियों की पूजा करते थे।

खुदाई में महिला मूर्तियों के अवशेष मिले हैं जिन्हें 'मातृदेवी' या 'उर्वरता की देवी' माना जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय मातृप्रधान धार्मिक परंपरा का प्रभाव था।

इसके अतिरिक्त, कुछ अग्निकुंड जैसी संरचनाएँ भी मिली हैं, जिनसे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यज्ञ या अग्नि-पूजा जैसी परंपराएँ भी विद्यमान थीं।

8. कला और शिल्पकला:

एरण की कला मुख्यतः मृद्भांडों और धातु के औजारों में दिखाई देती है। मिट्टी के बर्तनों पर बनी आकृतियाँ उनके सौंदर्यबोध को दर्शाती हैं। तांबे से बने औजार यह दिखाते हैं कि वे तकनीकी दृष्टि से काफी उन्नत हो चुके थे।

इसके अतिरिक्त, एरण से मनके, माला और आभूषण भी मिले हैं। ये वस्तुएँ बताती हैं कि वहाँ के लोग सौंदर्य-प्रिय थे और अपने रूप-सज्जा पर ध्यान देते थे।

9. व्यापार और संपर्क:

एरण के लोगों का संपर्क पास के अन्य ताम्रयुगीन स्थलों जैसे—मालवा, नवदातोली और आहर—से था। मिट्टी के बर्तनों की शैली और धातु के औजारों की समानता से यह प्रमाणित होता है कि इन संस्कृतियों के बीच वस्तुओं और विचारों का आदान-प्रदान होता था।

10. सांस्कृतिक महत्व:

एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति मध्य भारत के सांस्कृतिक विकास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसने पत्थर युग की सादगी और धातु युग की तकनीकी प्रगति — दोनों को जोड़ने का कार्य किया। यहाँ की संस्कृति से यह स्पष्ट होता है कि मानव अब प्रकृति पर निर्भर रहकर नहीं, बल्कि उसे समझकर उपयोग करने की दिशा में अग्रसर हो गया था।

एरण ने यह सिद्ध किया कि भारतीय उपमहाद्वीप के इस भाग में सभ्यता का विकास बहुत संगठित रूप से हो रहा था और लोग सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक रूप से आगे बढ़ रहे थे।

निष्कर्ष:

एरण की ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति भारत की प्राचीन सभ्यताओं की जड़ों को समझने में अत्यंत उपयोगी है। यहाँ के लोगों ने कृषि, धातु प्रयोग, कला, धर्म और समाज में अद्भुत प्रगति की। वे न केवल मेहनती थे, बल्कि रचनात्मक और संगठित भी थे।

एरण की खुदाई यह सिद्ध करती है कि मध्य भारत उस समय सभ्यता का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, जिसने बाद के काल में विकसित होने वाली संस्कृतियों – जैसे गुप्तकालीन और ऐतिहासिक सभ्यताओं – के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया। इस प्रकार, एरण की ताम्रपाषाण संस्कृति भारतीय इतिहास में एक गौरवशाली अध्याय के रूप में देखी जाती है।